पवकाविति। Vielleicht ist das Femin. nicht zu verwerfen, da der Mensch doch über das Thier geht. Ueber आर्पपाञ्च s. zu S. 18. Z. 11.

- Z. 13. M. योषितां मधुर्गीिभः st. अनृतमयवाङ्मधभिः ।
- Z. 15. Man lese mit den Handschriften णाहहिस und vgl. zu. S. 17. Z. 7. 8.
- Z. 16. Kâtav. सपंधिदो (= संबन्धितो)। Chezy संबद्धिणो st. संबद्धिदो। M. संबिधिदो जणो भ्रण किह्दब्बस्स। Kâtav. wie wir.
- Z. 18. Man sagt sowohl तापसवृद्ध । als auch वृद्धतापस । Vgl. Pâń. II. 2. 38.
- Dist. 118. Hem. a. Calc. Ausg. und Çank. अमानुषीणां । Kâtav. अमानुषीषु मानुषतातिव्यतिरिक्तामु तिर्यक्तातिष्वत्यर्थः । Diese Erklärung ist nichts weniger als genau. Hem. b. Die Ausgg. परिवोधवत्यः । die Scholiasten wie wir. Hem. c. Die Ausgg. und Çank. अन्तरीच । Hem. d. Dieselben: अन्यद्वितैः । Dieselben und M. किल st. खलु ।
- Z. 22. W. मृद्ध st. मृपाद्ध । M. मृप्पणो st. मृत्यो und मृपासिण st. मृपामाणेण । Vor पेक्लिस fügt M. सट्यं hinzu. Kâtav. stimmt in Allem mit uns überein.
- Z. 23. अपणो fehlt bei M. C. पर्विसणी। W. पर्वेसिणो। T. पर्देसिणो। Kâtav. प्रदेसिणो। aber in der Uebersetzung: प्रवेशिनः। die Ausgg. स्वब्देसिणो। Çank. धर्मानु हात्मकप्रकाशिनः।

Seite 69.

- Z. 1. C. T. W. तवाणुकिदं। M. तव ऋणुकिदि सूऋणणो पउिवित्तस्सिद्। C. पउिविजिस्सिद्। Kâtav. तवाणुकिदी पविसिद्। in der Uebersetzung: तवानुकृति ohne Verbum.
- Z. 2.. M. und die Ausgg. fügen am Anfange der Rede Folgendes hinzu: वनवासाद्विश्रमः (Chezy साद्विश्रमः । Çank. अविश्रम = विलासप्रून्य) पुनर्त्रभवत्याः कोपो लच्यते (M. कोप श्राल°) । तथा हि

न तिर्यगवलोकितं भवति (M. भवत्) चनुरालोहितं वचो हि पर्णान्तरं न च परेषु संसक्तते । हिमार्न इव वेपते सकल एष बिम्बाधरः प्रकामविनते भ्रवी युगपरेव भेरं गते ॥

अपि च। - St. संसक्तते Hem. b. liest Chezy संगच्छते। M. संपद्यते। Çank. wie die Calc. Ausg. - Hem. d. Chezy स्वभाव st. प्रकाम (Çank. प्रकामं = अत्यर्थ। vgl. zu. S. 34. Dist. 58. Hem. b.)। - M. विनतश्रुवी। - M. मा st. मां und इव व्यायस्थतो उस्याः st. इवास्याः।



